SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्कूली बच्चों की भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रभात कुमार, शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बी.आर.ए., बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
प्रभात कुमार, शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बी.आर.ए., बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/09/2021
Revised on : -----
Accepted on : 21/09/2021
Plagiarism : 00% on 14/09/2021

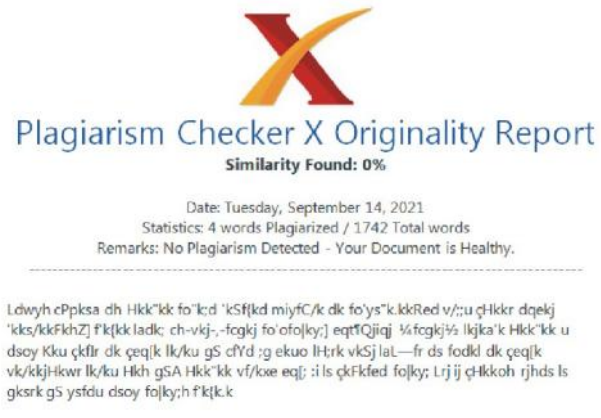
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Tuesday, September 14, 2021
Statistics: 4 words Plagiarized / 1742 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

Ldwyh cPpksa dh Hkk"kk fo"lcd 'kSf{kd miyfC/k dk fo'ys"k.kkRed v/;;u çHkkr dqekj 'kks/kkFkhZ] f'k{kk ladk; ch-vkj-,-fcgkj fo'ofo|ky;] eqt¶Qjiqj ¼fcgkj½ lkjka'k Hkk"kk u dsoy Kku çkfIr dk çeq[k lk/ku gS cfYd ;g ekuo lH;rk vkSj laL—fr ds fodkl dk çeq[k vk/kkjHkwr lk/ku Hkh gSA Hkk"kk vf/kxe eq[; :i ls çkFkfed fo|ky; Lrj ij çHkkoh rjhds ls gksrk gS ysfdu dsoy fo|ky;h f'k{kk.k

शोध सार

भाषा न केवल ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है बल्कि यह मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का प्रमुख आधारभूत साधन भी है। भाषा अधिगम मुख्य रूप से प्राथमिक विद्यालय स्तर पर प्रभावी तरीके से होता है लेकिन केवल विद्यालयी शिक्षण से बच्चों में उच्च स्तरीय भाषा उपलब्धि की प्राप्ति हो ऐसा संभव नहीं है। भाषा विषयक उपलब्धि अभ्यास से ही उच्च स्तर की हो सकती हैं, यह स्कूली वातावरण के साथ साथ घरेलू वातावरण पर भी निर्भर करता है जिसमे माताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। कहते है कि लिखने को तीन चरणों में पूरा किया जाना चाहिए देखकर लिखना, सुनकर लिखना और मन से लिखना तत्पश्चात विषयवस्तु के दायरे से बाहर विविध विषयों पर अनौपचारिक संवाद भाषा शिक्षण की रोचकता और प्रभाव को प्रभावी बनाने में महत्ती भूमिका अदा करती है इसलिए स्कूलों में ऐसे वातावरण का निर्माण अवश्य किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द

भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि, विद्यालयी शिक्षण, स्कूली वातावरण.

परिदृश्य

प्राथमिक कक्षा में भाषा शिक्षण बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के साथ–साथ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए भी आधार प्रदान करता है। पहली से पांचवी तक की कक्षाओं में भाषा शिक्षण को पाठ्यचार्या में केंद्रीय स्थान प्राप्त है क्योंकि भाषा हीं वह माध्यम है, जिसके द्वारा आधारभूत कौशल एवं किसी दूसरे विषय के संप्रत्यय को सीखने व समझने में सहायता मिलती है। कहा गया है कि किसी बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में और लोगों के साथ संवाद स्थापित करने में भाषा के नौ आधारभूत कौशल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो क्रमशः सुनना,

बोलना, पढ़ना, लिखना, विचारों को समझना, जरूरी व्याकरण की जानकारी, खुद से सीखना, भाषा का उपयोग और शब्दकोश पर पकड़ इत्यादि महत्वपूर्ण है।

भाषा मानव भाव की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है, जिसके अभाव में मानव पशु तुल्य है। व्यापक रूप से देखें तो विचार विनिमय के समस्त साधनों को भाषा कहते हैं। भाषा न केवल ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है बल्कि यह मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का आधारभूत साधन भी है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भाव या विचार को बोलकर या लिखकर दूसरों तक पहुंचाते हैं। यह विचार विनिमय का प्रमुख साधन है यह प्रदान करने का प्रमुख साधन भी भाषा हीं हैं। कहा जाता है कि जिस व्यक्ति की भाषा जितनी सशक्त होगी उतनी ही सशक्त उनकी विचार शक्ति होगी। विचार एवं भाषा का अटूट संबंध है। भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपियों का विकास मूलतः ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ब्राह्मी का प्रचार भारत में लगभग 350 ई. तक रहा। संसार में अनेकों भाषाएं और बोलियां बोली जाती है इसलिए इस संबंध में एक प्रसिद्ध कहावत है कि – ''चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी।'' भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार पूरे विश्व में भाषाओं और बोलियों की संख्या लगभग 2,796 है।

सन 2003 में एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित प्राथमिक शिक्षा नामक जर्नल में फिरोजा मुजफ्फर ने वाक वाचन और लेखन कौशल का विकास विषयक आलेख के निष्कर्ष में बताया कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ना और सफलता प्राप्त करना तब ही संभव है जब हमारा बोलना, पढ़ना और लिखना प्रभावपूर्ण हो। एनसीईआरटी ने भी दस वर्षीय स्कूली पाठ्यक्रम में भाषा के प्रति अपने दृष्टिकोण में प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को उचित भाषा स्तर तक पहुंचने के लिए विद्यालय के कुल समय का पच्चीस प्रतिशत निश्चित किया था।

हम जानते हैं कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं अपितु विचारों का निर्माण के लिए भी आवश्यक है। भाषा हमारी संवेदना है। भाषा के इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए छात्रों में संवेदनशीलता का विकास करना आवश्यक है। विशेषकर हिंदी के लिए अतिआवश्यक इसलिए भी हो जाता है क्योंकि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो छात्रों को संवेदनशील, संस्कारमय एवं उत्तरदायित्व निर्वहन का आभास न केवल व्यावसायिक बल्कि सामाजिक और पारिवारिक जीवन के प्रति भी संवेदनशील बनाती है जिससे भारतीय संस्कृति व संस्कार के संरक्षण के साथ–साथ जीवन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री, जीवविज्ञानी एवं प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे ने भी बच्चों के संज्ञानात्मक विकास विषयक अपने प्रतिमान में बच्चों के भाषा विकास के लिए पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था में भाषा विकास का विशेष महत्व है। उन्होंने कहा कि दो वर्ष का बालक लगभग दो सौ शब्दों को समझ लेता है, जबकि छः वर्ष का बालक लगभग 16,000 शब्दों को समझ लेता है। उन्होंने यह भी बताया कि दो वर्ष का बालक एक या दो शब्दों के वाक्य बोलता है जो व्याकरण की दृष्टि से प्रायः अशुद्ध एवं अपूर्ण होते हैं, जबकि 3 वर्ष का बालक लगभग आठ–दस शब्दों के वाक्य बोलने लगता है जो व्याकरण की दृष्टि से लगभग शुद्ध होते हैं। पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था में भाषा का अधिकतम विकास होता है, अच्छे एवं समृद्ध भाषायी वातावरण में बालक को भाषा विकास करने के अधिक अवसर मिलते हैं।

भाषा शिक्षण अधिगम मुख्य रूप से प्राथमिक स्तर पर प्रभावी तरीके से होता है लेकिन केवल विद्यालयी शिक्षण से बालकों में उच्चस्तरीय भाषा उपलब्धि की प्राप्ति हो ऐसा संभव नहीं है। भाषा विषयक उपलब्धि अभ्यास से ही उच्च स्तर की हो सकती है। यह स्कूली वातावरण के साथ–साथ घरेलू वातावरण पर भी निर्भर करता है जिसमें बालकों के माताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

अध्ययन का शीर्षक

स्कूली बच्चों की भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन स्कूली बच्चों की भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन विषयक शोध

अध्ययन में वर्णात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है और प्राप्त तथ्यों का प्रस्तुतीकरण हेतु विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं शैक्षिक निहितार्थ

कार्यरत एवं घरेलू माताओं के बच्चों की भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि पर पूर्व में हुए अनुसंधान के साहित्य की समीक्षा एवं अवलोकन करने के पश्चात जो जानकारियां प्राप्त हुई है। इन जानकारियों से प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि पर विभिन्न कारकों के अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव के कारणों का भी पता चलता है। शोध अध्ययन के क्रम में निम्नलिखित उल्लेखनीय तथ्यों का पता चलता है:

1. प्राथमिक स्तर पर शब्द, भाषा उपलब्धि तथा समझ विकसित करने के लिए बालको में स्वतंत्र अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण के मौके विद्यालय में उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
2. अध्ययन में यह भी पाया गया कि भिन्न–भिन्न बुद्धिलब्धि वाले बच्चे एक समान भाषा उपलब्धि नहीं प्राप्त कर सकते हैं इसलिए सामान्य और मंदबुद्धि वाले बालकों की भाषा उपलब्धि के लिए उपचारी शिक्षण के साथ–साथ शिक्षक द्वारा मौखिक पठन एवं लेखन अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
3. अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि लेखन त्रुटि सुधार में अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा है परिणामस्वरूप अधिकांश छात्र–छात्राएं लेखन त्रुटि करते हुए पाए जाते हैं।
4. बुद्धिलब्धि का सकारात्मक संबंध भाषा रचनात्मक क्षमता से है। विभिन्न शोध अध्ययन में बुद्धि और रचनात्मक क्षमता दोनों में सकारात्मक सहसंबंध पाए गए हैं।
5. अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि बालकों की तुलना में बालिकाओं में भाषा रचनात्मकता के विभिन्न आयामों की (जैसेः प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता एवं विस्तार) क्षमता अधिक पाई गई।
6. विभिन्न शोध अध्ययन में यह भी पाया गया कि भाषा सृजनात्मकता का भाषा विषयक उपलब्धि से सार्थक सकारात्मक सहसंबंध है।
7. कक्षागत पुस्तके बच्चों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति क्षमता को सीमित कर देती है इसलिए बच्चों की आयु और कक्षा के अनुसार उन्हें किसी भी विषय या प्रकरण पर स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। जिससे कि बच्चों में भाषा के प्रति आत्मविश्वास, क्रमबद्धता एवं विभिन्न विषयों में अंतरसंबद्धता स्थापित करने की क्षमता विकसित हो सके।
8. बच्चों में पढ़कर समझना या समझकर पढ़ना भाषा सीखने का पहला महत्वपूर्ण सोपान है इसलिए एकाधिक बार पढ़कर उसकी विषयवस्तु को समझने का कौशल, समझ और ज्ञान सृजन के लिए वातावरण निर्माण किया जाना चाहिए साथ–ही–साथ लिखने को तीन चरणों में पूरा किया जाना चाहिए, देखकर लिखना, सुनकर लिखना और मन से लिखना, तत्पश्चात् विषयवस्तु के दायरे से बाहर विविध विषयों पर अनौपचारिक संवाद भाषा शिक्षण की रोचकता और प्रभाव को प्रभावी बनाने में महती भूमिका अदा करती है, इसलिए स्कूलों में ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए।
9. एक सामान्य शिशु मात्र तीन वर्ष में ही केवल एक भाषा में ही नहीं बल्कि एक से अधिक भाषाओं में भाषिक क्षमता प्राप्त कर लेता है, यह एक जन्मजात गुण है। वर्तमान समय में भाषिक विविधता एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन कर उभरी है, लेकिन बच्चों को मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए। फिर भी शिक्षकों को कक्षा में बहुभाषी वातावरण का अनुकूलतम उपयोग कर सकने की क्षमता हेतु योग्यतावान बनाया जाना चाहिए क्योंकि बहुभाषिकता अत्यधिक संज्ञानात्मक लचीलापन एवं सामाजिक सहिष्णुता को जन्म देती है।
10. साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि जिन विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया द्वारा हिंदी भाषा का शिक्षण दिया गया उसकी तुलना में परंपरागत शिक्षण विधि द्वारा पढ़ाए जाने वाले विद्यार्थियों की भाषिक उपलब्धि निम्न स्तर की पाई गई।

11. कामकाजी माताओं के पाल्यों की हिंदी भाषिक शैक्षिक उपलब्धि और गैर–कामकाजी माताओं जिनके बच्चों को अधिक सुविधाएं एवं वातावरण उपलब्ध होने के बावजूद कामकाजी पल्यों की हिंदी भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर का पाया गया।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि स्कूली बच्चों की भाषा विषयक शैक्षिक उपलब्धि को अनेक कारक प्रभावित करते है, जिसमे स्कूली वातावरण, पाठ्यक्रम, कक्षा की पुस्तके, स्कूल में विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता, बच्चो में भाषा के प्रति आत्मविश्वास, बच्चों की बुद्धिलब्धि, बच्चों की रचनात्मक क्षमता, शब्द और भाषा की समझ विकसित करने के स्कूली वातावरण, घर पर स्वअध्ययन का वातावरण, माताओं का बच्चों के अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण इत्यादि अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। वर्तमान समय में भाषा की महत्ता को रेखांकित करते हुए एक भाषा विद्वान ने लिखा है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ना और सफलता प्राप्त करना तब ही संभव है जब हमारा बोलना, पढ़ना और लिखना प्रभावपूर्ण हो।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2007) *''मानसिक विकास, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान,''* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, तृतीय संस्करण, पृष्ठ 143–152।
2. त्यागी, पी.एस. एवं त्यागी, कृष्णा (2012) ''आगरा जिले में माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा में लिखित अभिव्यक्ति कौशल विकास में समस्याओं के कारणों का अध्ययन, *Asian Journal of Educational Research and Technology*, Volume 2(2), July (2012) pp 215& 218, www.tspmt.com
3. सेमवाल, शिवप्रसाद (2015) बच्चों की शिक्षा और मातृभाषा, *प्रवाह,* मई–सितंबर 2015, पृष्ठ 42–46, अजीज प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित जोधपुर पत्रिका।
4. कुशवाहा, शशि एवं सिंह, सुनील कुमार (2017) प्राथमिक विद्यालयों में भाषा शिक्षण की वर्तमान स्थिति का आकलन, *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* वर्ष–38, अंक–2,अक्टूबर 2017, पृष्ठ 23–36.
5. कांडपाल, केवलानंद (2017) प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण, *आधुनिक भारतीय शिक्षा,* वर्ष–37, अंक–3, जनवरी 2017, पृष्ठ 59–72.
6. कुमार, सचिन (2017) शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षा के विकास की दशा एवं दिशा, Paper presented in National Seminar on learner centered Education (NSLCE-2017), Deptt. of Education Ranchi Women's College, Ranchi Soviniour Page-52.

****